एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अमरूद में प्रमुख कीटों का समेकित प्रबंन्धन

*हिमांशु रंजन
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश
*संवादी लेखक का ईमेल पता: himanshu072pusa@gmail.com

फल उत्पादन में चीन के बाद भारत का विश्व में दुसरा स्थान है। हमारे देश में आम, केला तथा नींबू वर्गीय फलों के बाद अमरूद चौथा प्रमुख फल है। अमरूद को ''गरीब का फल'' कहा जाता है। इसका फल मीठा, मधुर सुगंध वाला, पाचक एवं स्वादिष्ट होता है। इन फलों में प्रचुर मात्रा में विटामिन–'सी' पाया जाता है। इन फलों को ताजा खाने के अतिरिक्त जैम व जैली बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। अमरूद भारत में लगभग सभी स्थानों पर पैदा किया जाता है। इसे मुख्य रूप से बिहार (प्रथम), आन्द्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, तामिलनाडु तथा राजस्थान प्रदेशों में उगाया जाता है। वित्तीय वर्ष 2023 में, भारत में उत्पादित अमरूद की मात्रा लगभग 5.59 मिलियन मीट्रिक टन होने का अनुमान है। यह पिछले वित्तीय वर्ष से मामुली वृद्धि थी। 2023 में देश में अमरूद की खेती का क्षेत्रफल लगभग 359 हजार हेक्टेयर था। आजकल गृहवाटिका में भी अमरूद को विशेष स्थान दिया जाता है। भारत में अमरूद की औसत उत्पादकता लगभग 16 टन प्रति हेक्टेयर है, जो अन्य विकसित देशों से कम है, इनके कई कारक है और इन कारकों में से कीट एवं बिमारियाँ प्रमुख है। अतः अमरूद का सफल उत्पादन के लिए समय रहते अमरूद फसल को कीटों एवं बिमारियों से सुरक्षा कर अच्छा उत्पादन प्राप्त किये जाए। अमरूद में आक्रमण करने वाले कीटों एवं संक्रमित करने वाले बिमारियों का विवरण एवं उनके नियंत्रण के उपाय निम्न उल्लेखित है।

1.फल मक्खी

व्यस्क मक्खी धुमैली भूरे रंग की होती है। नर एवं मादा व्यस्कों की पंख की लम्बाई क्रमशः 9–11 तथा 10–14 मि०मी० होती है। नर, मादा कीट से छोटा होता है। इस कीट के मैगट (पिल्लू) हल्के क्रीम रंग के, बेलनाकार एवं 5–8 मि०मी० लम्बे होते हैं। यह मक्खी बरसात के फलों को विशेष क्षति पहुँचाती हैं। मादा मक्खी अपनी अण्डनिक्षेपक की मदद से पके हुए फलों में छिद्र बनाकर अण्डें देती हैं। जिनसे बाद में सूंडिया (मैगट्स) निकलती है, वो फल के अन्दर गुदा को खाने लगती हैं। फलों में किण्डवन (फरमनटेशन) होने से गुदा सड़ जाता है जिससे प्रभावित फल भी पकने से पूर्व नीचे गिर जाता है। यह कीट कच्चे फलों को क्षति नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि ये मादा मक्खियाँ कच्चे फलों के कठोर छिलके में अण्डे देने के लिए छिद्र बनाने में असमर्थ होती है। प्रभावित फलों को काटकर दिखने पर अन्दर मैंगट (सूंडियाँ) साफतौर पर दिखाई देते हैं। संक्रमित फलें बाद में काले व भूरे रंग में परिणत होने के साथ सड़कर गिर जाते हैं।

नियंत्रण

- ग्रसित फलों को नियमित रूप से एकत्र करके नष्ट करते रहना चाहिए, ताकि इनके प्रकोप को और फैलने एवं आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- गर्मियों में बगीचों की गहरी जुताई करना चाहिए, ताकि मिट्टी के अन्दर छिपे प्यूपा बाहर आ जाय, जो सूर्य की तेज धुप व चिड़िया द्वारा खाकर नष्ट हो जाय।
- अमरूद के बाग के पास अनार का बाग नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि फल मक्खी का सबसे अधिक पसन्द का परपोषी अनार का पौधा है।
- प्रलोभक चुग्गा : 10 लीटर पानी में 100 ग्राम शक्कर तथा 10 मि०ली० मैलाथियान 50 ई०सी० मिलाकर इसे 100 मि०ली० प्रति मिट्टी व प्लास्टिक के प्याले की दर से प्याली में डालकर जगह–जगह पर पेड़ों पर लटका देना चाहिए।
- फल मक्खी को अमोनिया से बनी ल्यूर या आइसो यूजिनोल नामक रसायन आकर्षित करते हैं। अतः इन्हे किसी कीटनाशक के साथ मिलाकर कीटों को नष्ट किया जा सकता है।
- फलन के मौसम के प्रारम्भ में और फलों के पकने से पहले मैलाथियान 50 ई०मी० या क्वीनालफास 25 ई०सी० (1.5 मि०ली०/लीटर पानी) का छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर किया जा सकता है।

2.चूर्णी बग (मिली बग)

इस कीट के शिशु एवं वयस्क मोम की तरह सफेद, चपटे एवं अण्डाकार होते हैं। इसे कई बार कवक का जाल भी समझ लिया जाता है। मादा वयस्क पंख विहीन होती है, जबकि नर कीट दो पंखों वाले होते हैं तथा ये गहरे लाल रंग के मृत्कुण (दहिया) होते हैं। इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही कोमल शाखाओं (टहनियों), पुष्पक्रमों, कोमल पत्तियों व

फलों पर चिपक कर उनसे रस चूसते है, जिससे पौधा पीला पड़ने लगता है। पत्तियाँ मुरझाकर सुख जाती है। अत्यधिक प्रकोप होने पर तो फूल भी कम आते हैं तथा उनसे फल भी कम बनते हैं। यह कीट एक लसलसा मीठा पदार्थ (मधुरस) स्त्रावित करता है, जिससे कवक (फफूंद) का आक्रमण भी शुरू हो जाता है। परिणामतः प्रकाश संश्लेषण क्रिया में विघ्न उत्पन्न होती है। इस कीट का प्रकोप फरवरी–मार्च तक पाया जाता है।

नियंत्रण

- बगीचे में साफ–सफाई का पूर्णतया ध्यान रखना चाहिए। प्रमुख खरपतवारों एवं गाजर घास को उखाड़कर नष्ट करना चाहिए।
- पेड़ के आस–पास की जगह साफ रखना चाहिए तथा सितम्बर तक थाले की मिट्टी को प्रतिमाह पलटते रहना चाहिए, ताकि कीट के अण्डे बाहर आकर नष्ट हो जाय।
- ग्रीष्म ऋतु में पौधों के आधार के पास गुड़ाई व जुताई करनी चाहिए, जिससे कीट के प्यूपे एवं अंडे बाहर आकर सूर्य की तेज धुप एवं ताप में नष्ट हो जाय।
- 50 से 100 ग्राम क्यूनालफॉस (1.5 प्रतिशत चूर्ण) के प्रति पेड़ की दर से थाले में 15–20 से०मी० की गहराई में मिट्टी के साथ मिलाना चाहिए।
- पौधों के तने के चारों तरफ भूमि की सतह से 300 मि०मी० की उँचाई पर 30–40 से०मी० चौड़ी एकल्काथीन सीट (400 गेज) लगाना चाहिए तथा इससे नीचे 15–20 से०मी० भाग तक ग्रीस का लेप कर दें। इस पट्टी को नवम्बर व दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में लगानी चाहिए। इस पट्टी के कारण अण्डों से निकले शिशु उपर नहीं चढ़ पाते हैं और पट्टी के नीचे ही एकत्रित हो जाते है। इनको हाथों से भी मारा जा सकता है या मोनोक्रोटोफास 36 एस०एल० (0.1 प्रतिशत) 1.5 मि०ली०/लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करके मारा जा सकता है।
- जब कभी भी पेड़ों पर शिशु कीट दिखाई पड़े तो निम्नलिखित कीटनाशकों में से किसी एक का छिड़काव करना चाहिए।

प्रोफेनोफॉस 50 ई०सी०	:	1 मि०ली०/लीटर पानी
मोनोक्रोटोफॉस 36 एस०एल०	:	1.5 मि०ली०/लीटर पानी
डायक्लोरभॉस 76 ई०सी०	:	1 मि०ली०/लीटर पानी
क्वीनॉलफॉस 25 ई०सी०	:	1.5 मि०ली०/लीटर पानी
डायमेथोएट 30 ई०सी०	:	2.0 मि०ली०/लीटर पानी

3. छाल भक्षक कीट (छाल भक्षक सूंडी) :

वयस्क कीट स्थूल मटमैले भूरे रंग का शलभ (ततैया) होता है। जिस पर काले–भूरे रंग के धब्बे होते हैं। अग्र पंख पर भी भूरे रंग के धब्बे होते है, जबकि पिछली जोड़ी पंखों का रंग धुयेंदार सफेद होता है। पंख विस्तार नर व मादा कीट में क्रमशः 35–38 मि०मी० एवं 46–50 मि०मी० होता है। मादा कीट, नर की अपेक्षा बड़ी तथा रंग पीला होतो है। पूर्ण विकसित सूंडी (लार्वा) मटमैला भूरे रंगकी 40–45 मि०मी० लंबी होती है। सूंडियों के शरीर पर छोटे–छोटे बाल होते हैं तथा शरीर के दोनों ओर गहरे भूरे दाग होते हैं। कीट की सूंडिया अमरूद की छाल, शाखाओं या तनों विशेषकर उनके, जोड़ वाले स्थानों में छिद्र करके अन्दर छिपी रहती है। रात्रि में ये इन छिद्रों से निकलकर पौधों की छाल को खाकर क्षति पहुँचाती है। ये रेशमी धागों से जुड़े हुए लकड़ी की टुकड़ों व अपने मल से बने रक्षक आवरण के नीचे खाती हुई टेढ़ी–मेढ़ी रास्ता बनाती है। अधिकांशतः ये रास्ते छिद्र के नीचे की तरफ होती है। एक छिद्र में प्रायः एक सूंडी ही पायी जाती है। छोटे पौधों में इसका प्रकोप होने पर पौधा बिमार दिखाई देता है और बढ़वार रूक जाती है। शाखाएं कमजोर होकर कभी–कभी पेड़ से अलग हो जाती है। यह देखा गया है कि इस कीट का प्रकोप काली मिट्टी तथा अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक होता है और 42–46 प्रतिशत तक पौधे ग्रसित पाये गये है।

नियंत्रण

- बाग की स्वच्छता और पौधों की सघनता को सीमित रखकर कीट की संख्या वृद्धि को सीमित किया जा सकता है।
- कटी–फटी छाल या ढ़ीली छाल को हटा देना चाहिए, ताकि वयस्क मादा कीट अण्डे न देने पाये। सूखी एवं ग्रसित तनों व शाखाओं को काटकर जला देना चाहिए।
- पौधों में कम छिद्र हो तो लोहे के तार से ही छिद्र में सूंडियों को मार देना चाहिए।
- सूंडियों के द्वारा किये गये छिद्रों में डायक्लोरभास 76 ई०सी० का 2–3 मि०ली०/लीटर पानी का घोल डालकर भी अन्दर उपस्थित सूंडी को नष्ट किया जा सकता है।
- सुरंगों में पेट्रोल या क्लोरोफार्म या ई०डी०सी०टी० मिश्रण (3–5 मि०ली०/सुरंग) को रूई में भिंगोकर भर दें तथा उसे गीली मिट्टी से बंद कर दें।
- पौधें की दो शाखाओं के कक्ष में कीट द्वारा बनाये गये जाले इस कीट की उपस्थिति का आभास देता है। अतः छिद्र में लोहे के तार डालकर सूंडी को मार देना चाहिए। ये उपाय प्रायः छोटे बागों व कम प्रकोप की स्थिति में उपयुक्त होता है।
- शाखाओं पर मैलाथियान 50 ई०सी० या सायपरमेथ्रिन 10 ई०सी० का 2 मि०ली० प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- अधिक आक्रमण होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 ई०सी० का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर तने के चारो तरफ लेप कर देना चाहिए।
- सुरंगों में कार्बोफ्यूरान 3जी का 5 ग्राम प्रति छिद्र अथवा सेल्फास (एल्यूमिनियम फास्फाईड) की 1 गोली (3 ग्राम) प्रति छिद्र में डालकर कच्ची मिट्टी से बन्द कर देना चाहिए।

4. सम्पुट वेधक (प्ररोह एवं फल वेधक) :

वयस्क शलभ (ततैया) आकार में छोटे एवं चमकीले पीले रंग के होते हैं। इसके पंखों पर छोटे–छोटे काले धब्बे पाये जाते हैं। इस कीट के पूर्ण विकसित सूंडियां (लार्वे) गुलाबी रंग की होती है, जिसपर छोटे काले धब्बे होते हैं। सुंडियों की लम्बाई लगभग 1.5 से०मी० होती है। इस कीट की सुडियां अमरूद के फल, कलियों एवं प्ररोहों को खाकर क्षति पहुँचाती है। अण्डों से निकलने के बाद सूंडियां पहले प्ररोहों एवं कलियों को वेधती है एवं बाद में बढ़ते हुए फलों के गुदे और बीजों को खाती है, जिससे फलें पकने से पहले ही गिर जाते हैं। प्रभावित फलों का स्वरूप सूंडियों के अन्दर जाने वाले छिद्र के पास खराब हो जाता है। सूंडियों के द्वारा छिद्रों से विसर्जित मल निकलता हुआ देखा जा सकता है। ऐसे प्रभावित फल कमजोर होकर सड़ जाते है और अंत में गिर जाते हैं। क्षतिग्रस्त प्ररोह एवं कलियां भी मुरझाकर सुख जाती है। कभी–कभी फलें भी पकने से पूर्व गिर जाते हैं। इस कीट के द्वारा 16.4–82.6 प्रतिशत तक फल–फूल क्षतिग्रस्त हो जाते है।

नियंत्रण

- अमरूद बाग के पास अनार का बाग नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि इस नाशक कीट का सबसे अधिक पसंद का परपोषी अनार का वृक्ष है।
- ग्रसित फलों को नियमित रूप से एकत्र करके नष्ट करते रहना चाहिए, जिससे इस कीट के प्रकोप को और फैलने एवं आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- रात्रि में एक लाईट ट्रेप (प्रकाश प्रपंच) प्रति हैक्टेयर लगाना चाहिए, जिससे व्यस्क कीट को प्रकाश में आर्कषित होने के उपरान्त मारा जा सके।
- फल मौसम के प्रारम्भ में और फलों के पकने से पूर्व मैलाथियान 50 ई०सी० या क्वीनालफॉस 25 ई०सी० (1.5 मि०ली०/लीटर पानी) का प्रथम छिड़काव फूल आते समय तथा अगला छिड़काव फल बनते समय करना चाहिए। प्रकोप की अधिकता होने पर पुनः छिड़काव 15 दिनों के बाद करना चाहिए।

5. अनार की तितली

यह अनार का प्रमुख कीट है, परन्तु अमरूद में भी इस कीट का अधिकाधिक प्रकोप होता है। कभी–कभी इस कीट के द्वारा सम्पूर्ण फसल बर्वाद हो जाती है। इस कीट का पूर्ण विकसित सूंडी गहरे–भूरे रंग के साथ 17–20 मि०मी० लम्बी होती है। इसके सम्पूर्ण शरीर पर छोटे–छोटे बालों के साथ उजला धब्बा होता है। वयस्क नर चमकीला हल्का नीला–बैगनी रंग का होता है, जबकि मादा कीट भूरापन लिए हुए बैगनी रंग की होती है तथा पंख पर नारंगी रंग के धब्बे होते हैं। इनके पंख का फैलाव 40–50 मि०मी० होता है। सूंडियां फलों में छिद्र करके गुदा के साथ बीज को भी खाती है। फलों के छिद्र में सूंडियों का आधा शरीर घुसाकर लटकते हुए देखा जा सकता है। एक फल में आठ–दस की संख्या में सूंडियां पायी जाती है। आक्रान्त फल में फफूंद और जीवाणु का आक्रमण भी हो जाता है, फलस्वरूप फल सड़ने लगता है। जिससे प्रभावित फल काला होकर सड़न के साथ दुर्गन्ध आने लगती है और अन्त में गिर जाती है। इस कीट से 40–90 प्रतिशत तक फल क्षतिग्रस्त हो सकते है।

नियंत्रण

- नियमित रूप से ग्रसित फलों व पेड़ों से गिरे हुए क्षतिग्रस्त फलों को एकत्रित करके नष्ट करते रहना चाहिए।
- गर्मियों मे बाग की गहरी जुताई करना चाहिए, ताकि प्यूपा बाहर आ जाय जो सूर्य की तेज धूप व चिड़ियों के द्वारा नष्ट किया जा सके।
- गृह वाटिका या छोटे वाग में फल के पकने से पहले कागज या पोलीथीन के बैग से ढक देने पर इन्हे क्षतिग्रस्त होने से बचाया जा सकता है।
- फूल आने वाली अवस्था में नीम उत्पाद (नीम गोल्ड व नीमीसिडीन 1500 पीपीएम) का 2 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- मैलाथियान 50 ई०सी० (2मि०मी०/लीटर पानी) या नोभल्यूरान 10 ई०सी० या क्वीनालफॉस 25 ई०सी० (1.25 मि०ली०/लीटर पानी) का पहला छिड़काव फूल बनते समय तथा अगला फल बनते समय करना चाहिए। अधिक प्रकोप की स्थिति में तीसरा व चौथा छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।